ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 118-122

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

'माटी–माटी अरकाटी' उपन्यास में व्यक्त मानवीय संवेदना

रुद्र चरण माझी

शोध अध्येता– हिन्दी विभाग, दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया (बिहार), भारत

Received-24.04.2023, Revised-28.04.2023, Accepted-03.05.2023 E-mail: rudra.majhi2019@gmail.com

सारांश: *भारत के आजादी से पहले औपनिवेशिक शासन के दौरान उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में बड़े पैमाने पर आदिवासियों को "चाय बागान" और "गन्ना उद्योग" में कुली मजदूरी काम करने हेतु लिया जा रहा था। उन आदिवासियों को मुख्य रूप से दो नामों से पुकारा जाता था। दक्षिण भारत, बिहार, पश्चिम उत्तर प्रदेश के गैर आदिवासियों को वे "कुली" और झारखंड के सदान आदिवासियों को "हिल कुली, धंगार और कोल" कहा जाता था और ये लोग और कोई नहीं बल्कि झारखंड के उरांव, मुंडा, संथाल, खड़िया और यहां की सदान जातियां हैं। अमरीका समेत अन्य देशों में दास प्रथा के उन्मोलन के लिए ब्रिटिश सरकारों ने 1833 ई. में एक सख्त कानून "स्लेवरी एबोलिशन ऐक्ट 1833" पारित किया। फ्रांस ने सबसे पहले ये कानून लागू कर 1818 ई. में दास प्रथा को सम्पूर्ण रूप से बंद करने की कोशिश की। जिसके कारण ब्रिटिश सहित अन्य देशों के उपनिवेशों में मजदूरों का जबरदस्त अकाल हो गया। ब्रिटिश गन्ना उद्योग चरमरा सी गई। उस समय केवल भारत और चीन ही ऐसे देश थे जिन्होंने सस्ते दामों पर कुली की व्यवस्था कर रखी थी। तत्कालीन समय पर भारतवर्ष पर ब्रिटिश उपनिवेश का शासन था और इसीलिए भारत से मॉरिशस मजदूर को भेजना सिर्फ 30 से 40 दिन ही लगता था। इसी कारण चीनी मिल के मालिकों ने अपने खर्चे पर मजदूरों की आपूर्ति करने में लग गए थे। उसी दौरान "स्लेवरी एबोलिशन एक्ट 1833" के तहत मजदूरों को किसी दूसरे देश में भेजना बहुत कठिन हो गया था, इसलिए उन्हें फ्री लेबर या इच्छुक स्वतंत्र मजदूर के तहत सीमित समय के लिए एग्रीमेंट के तहत भेजने का प्रबंध किया गया और कालान्तर में एग्रीमेंट से गिरमिट और गिरमिट से गिरमिटिया मजदूर कहा गया ।*

कुंजीभूत शब्द– औपनिवेशिक शासन, चाय बागान, गन्ना उद्योग, आदिवासियों, धंगार और कोल, उरांव, मुंडा, संथाल, खड़िया ।

हिन्दी साहित्य के कालजयी उपन्यासों में अश्विनी कुमार पंकज द्वारा रचित उपन्यास "माटी–माटी अरकाटी" अपनी एक स्वतंत्र पहचान लेकर आई। स्वतंत्रता पूर्व बिहार एवं वर्तमान के झारखंड राज्यों से हजारों लोगों को मॉरिशस जैसे देशों को मजदूरी के लिए भेज गया था और उनमें से 80 प्रतिशत लोग लौटकर कभी नहीं आए, न ही स्वतंत्रता के बाद सरकार कुछ जानने की कोशिश की। इस सच्चाई को उपन्यासकार विभिन्न तथ्य के सहारे रखने की कोशिश किया है। इस उपन्यास की सफलता और सार्थकता के ऊपर बात करें तो अभी तक इस उपन्यास के ऊपर हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों के द्वारा तरह –तरह की समीक्षा प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास की कहानी भले ही झारखंड के विस्थापित आदिवासियों को लेकर लिखी गई हो। परंतु उपन्यास के प्रत्येक पात्र, प्रत्येक कथन में मानवीय पहलुओं पर, मानवीय संवेदना पर गंभीरता के साथ वर्णन किया गया है। मारी, गयाना, फीजी, सूरीनाम, टुबैगो सहित अन्य कैरिबियन तथा लैटिन, अमरीकी और अफ्रीकी देशों में लगभग डेढ सौ सदी से पहले भेजे गए आदिवासियों तथा गैर आदिवासियों की कथा को, उनके पीड़ा को, उनके ऊपर हो रहे अत्याचार को काफी मार्मिक ढंग से वर्णन किया गया है। आज हर कोई अपनी आजादी को लेकर बेहद सजग है और आजादी के बाद स्वतंत्रता ही आधुनिक जीवन का सबसे अमूल्य निधि है। पर हमेशा से जीवन ऐसा नहीं था, यही बात उपन्यास "माटी–माटी अरकाटी" में शुरू से अंत तक बताई गई है। स्वतंत्रता का महत्व बताते हुए लेखक अश्वनी कुमार पंकज ने बड़ी ही मार्मिक तरीके से उप स्थापित किया है। उपन्यासकार इस उपन्यास में दिखाते हैं की कैसे कुछ लोग आदिवासियों को इंसान मानने से इनकार करते हुए उनके साथ जानवरों से भी बुरे व्यवहार करते हैं। पूर्व एवं पश्चिम के हजारों–लाखों आदिवासियों के दर्दनाक जीवन की कहानी इस उपन्यास में दिखाई गई है। तत्कालीन समाज से आगे बढ़ने के लिए अपने आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए कुछ लोगों ने बेहतर जीवन की स्वप्न लिए परदेश का रुख किए तो कुछ लोगों को अपने ही देशवासियों द्वारा प्रताड़ित किया जाता रहा। रोजगार की चाह में निकले लोगों में से कुछ को हैजा, डायरिया जैसे बीमारी ने परलोक भेज दिया। तो कुछ को मानवीय हवस और शरीर को नोच खाने वाले भेड़िए ने जकड़ लिया। उपन्यास में अत्याचार करने और अत्याचार सहने की चरम शक्ति का प्रदर्शन हुआ है।

उपन्यासकार अश्वनी कुमार पंकज 'माटी–माटी अरकाटी' उपन्यास को तीन भागों में विभाजित किए हैं जल, जंगल, जमीन जो मूल रूप से आदिवासियों का ही पहचान है। "जल" यानी प्रथम भाग में वे लिखते हैं "जल", इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जो पहले किसी ने कहा–सुना–गाया या पढ़ा–लिखा नहीं हो। फर्क सिर्फ इतना है कि उन सब में कोंता नहीं था। "जंगल" यानी दूसरे अध्याय में वे लिखते हैं इसमें सच उतना ही है जितना दाल में नमक होता है। बाकी सब काल्पनिक है। "जमीन" धरती सृष्टिकर्ता की औरत है। जो जीव जगत को प्राणवान बनाए रखती है और मृतकों की देखभाल करती है।

'माटी–माटी अरकाटी' उपन्यास में जातिवाद की पीड़ा– उपन्यास के प्रथमार्ध से ही जातिवाद का दखल देखने को मिलती है। मॉरिशस ले जाते हुए मजदूरों में तथाकथित उच्च कुल के ब्राह्मण मजदुर भी थे और साथ में हिल कुली धाँगर आदिवासी भी। वे सभी लोग भले ही साथ में जा रहे थे मजदूरी करने परंतु ब्राह्मण समुदाय के तथाकथित उच्च कुल में जन्में लोग अपने जाति को लेकर सभी लोगों से खुद को श्रेष्ठ समझ रहे थे। उनमें से रामनारायण सभी लोगों का अगुआई कर रहा था। पहले ही रात जब खाना बांटा जा रहा था तो उन्होंने साथ में बैठकर खाना खाने के लिए मना कर दिया और कहने लगा "हम ऊंच जात के बानी। बारहमान देवता! नीच जात अउर जंगली लोग के साथ बईठ के नाहीं खायम।" रामनारायण की यह जातिवाद का जीत ही थी जो पूरे जहाज में एक

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

सिस्टम बन गई और मजदूर वर्ग भी अंत में दो गुटों में तबदील हो गई और सभी का खाना भी अब दो समूह में बनने लगा। परंतु ये ढोंग ज्यादा दिन नहीं चल पाया और अगले दिन जब रामनारायण "टोपोस" के कार्य को खुद से चुना और उसको जब "टोपोस" यानि टट्टी साफ करना ही इस कार्य की वास्तविकता है यह सुनकर उसका जातिवाद की नशा उतर गया परंतु इसके बावजूद जातिवाद का खुमार उतरा नहीं था। रामनारायण का पानी जब अछूत फगुआ प्यास के मारे पी जाता है तो झगड़ा हो जाता है कैप्टन अपने इस चोरी को लिपिबद्ध कर लिखता है "पानी पीने को लेकर इस पर लोअर कास्ट कुली फोगला और रामनारायन के बीच झगड़ा हुआ"।

जातिवाद का विनाश होना इतना आसान नहीं था मारिसस के उस मजदूर बस्ती में भी अभी तक जातिवाद खत्म हुआ ही नहीं था भले ही बस्ती में सभी मजदूर थे परंतु ब्राह्मण होने के नाते रामनारायण सभी से खुद को श्रेष्ठ समझता था और तमाम लोगों के ऊपर अपना रौब जमाना चाहता था। फुलवरिया के साथ रामनारायन और उनके साथियों ने मिलकर बलात्कार करते हैं। एक दिन कुंती को अकेले पाकर उसे बोलता है "अरे हम हूं मरद हैं, ऊ साला जंगलिया लोहार लायक नईखे नू। कोल–चूहाड सब नीच जात नू होता होई। हमारा झोपड़ी में चोलो। रानी बनाके रखम।" रामनारायण ब्राह्मण होने के नाते सभी जगह में अपना हक सबसे पहले मानता है। फगुआ के अनुसार "रामनारायण जब गुफवा में घुसने लगा तो हमार से ना रहल गइल। उसका हथवा तुरते धर लिए। ऊ सोचा, हम पहिले जाना चाहते हंय। समझाइश करने लगा। बाबाजी लोग का जूठा गिरने के बाद ही दूसरा कोई को खाने का रेवाज हय। हाथ छोड़ाने का बहुत कोसिस किया। हम छोड़बे नइ किए। तब रामनाराइना खिसा गया। ओकर हाथ तो खुलले बा। हाथ चला दिहिस।"

रामनारायण अपने धर्म की दुहाई हर जगह दे रहा था। वह चाहता था की किसी भी तरीके से उस बस्ती में अपना वर्चस्व बना रहे और धर्म के नाम से लोगों को ठगते रहे। समय–समय पर वह बोलता है "हम कहस तानी...धरम बिना लोग पगला जाइ। लेकिन तोहिन लोग सुनबऽ तनऽ। जात–पात, ऊंच–नीच, बड़–छोट...सब समाज के चलावे खातिर नू बनावल गइलबा। ठीक बा कि इहवां जात–पात के कउनों माने–मतलब नइखे। हमनी सभे केहु हिंदुस्तानी बानीं। लेकिन सोचऽ जा, जे होवत बा, ई सब ठीक बा का? काहे अइसन होखऽता? इहे से कि अधरम बढ़ऽता। सिर्फ यह ही नहीं रामनारायण नारी शिक्षा के विरुद्ध कहने लगता "लइकिन लोगिन के पढ़वला के का जरूरत बा? काम करिहें, बच्चा–घर समहरिएं...एहे काम नू बा लइकिन–मेहरारू लोगिन के। पढ़वला से मजूदरी के त नोकसान होइबे करी...खिरिसतान इसकुलिया जाते–जाते उनकर चालो–चलन खराब हो जाइ। "रामनारायण का यह मनसा था की लोग पूजा पाठ, धर्म, रीति रिवाज से उलझे रहे और उनसे अपना स्वार्थ हासिल करते रहें। इसके लिए वहां के अंग्रेज अफसर से मिलकर साजिश के तहत गांव में एक मंदिर भी बनवा लेता है और मंदिर प्रतिष्ठा के दिन उन अफसर और सिपाहियों के मदद से पूरा बस्ती में नरसंहार किया जाता है। जिसमें कोंता समेत ओंजा, फगुआ, आदि के ऊपर जानलेवा आक्रमण किया जाता है।

'माटी–माटी अरकाटी' उपन्यास भूख की पीड़ा– उपन्यास में गिरमिटिया मजदूर का दुखद वर्णन देखने को मिलता है। उन्होंने अपने बाकी बचे जीवन को सही ढंग से जीने के लिए, कुछ कमाने के लिए, अपने भविष्य संवारने के लिए मॉरिशस जा रहे थे। परंतु विडंबना देखिए जहाज में उनके लिये रोटी और तरकारी तो रजिस्टर में लिखा जाता है और मिलता है चार बिस्कुट और एक–एक मग चाय। उपन्यास में तत्कालीन मजदूरों के ऊपर हो रही उत्पीड़न को दिखाया गया है। यात्रा की चौदह दिन जब भात नहीं मिला तो कूली जोरन "भात खायम, भात खायम" कहकर एक जहाज की रेलिंग पर खुद–कुशी करने चढ़ जाता है। उपन्यासकार लिखते हैं "यह वाकया चौदहवें दिन के सफर में नाश्ते के ठीक बाद का है। समूह नंबर तीन का कुली जोरन अचानक 'भात खायम भात खायम, भात ना मिली तो हम समुंदर में कूद के अपन जान दे देम' कहता दौड़कर डेक के रेलिंग पर में रस्सी पकड़कर ऊपर चढ़ने लगा"।

गरीब आदिवासियों के लिए भात बहुत महत्वपूर्ण है। वे दो वक्त का खाना के लिए सब कुछ करते हैं। भात का महत्व महाश्वेता देवी के उपन्यास "जंगल के दावेदार" में भी दिखने को मिलती है जहां बिरसा मुंडा बोलते हैं "हम घाटों हीं क्यों खायें और बिरसा मुंडा राधा से भात रांधने के लिए बोला था और उस भात की चाहत से वह पकड़ा भी गया।" इस भूख की पीड़ा को जहाज पर हो रहे अत्याचार, अमानवीय तरीके से पशु की तरह मार पीट के बाद मिलने वाला खाना को लेखक ने अपने शब्द में कंटाहा–भोज' के साथ तुलना किए हैं।

"उस दिन न दोपहर में और न ही रात में ठीक से किसी के गले में कौर उतरा। पर जिंदा रहने के लिए खाना जरूरी था। इसलिए खाना किसी ने नहीं छोड़ा। सिवाय बीमार लोगों के। जो भी मिला, उसे 'कंटाहा–भोज' की तरह अपने–अपने पेट में डालकर सब सो गए। "उपन्यास में सिर्फ खाने के लिए ही अत्याचार नहीं किया जा रहा था पीने की पानी के लिए भी लोग तरस रहे थे इस पर जहाज के कैप्टन डायरी में लिखता है "एक कुली दूसरे का पानी चुराता हुआ पकड़ गया। प्रति व्यक्ति को एक बोतल पीने का पानी दिया जाता है। यह एक बोतल पानी उसे दो दिन तक चलाना होता है। अकसर कुली लोग एक–डेढ़ दिन में ही अपने हिस्से का पानी इस्तेमाल कर लेते हैं और प्यास लगने पर दूसरे का पानी चुराते हैं। आज जो कुली पानी चोरी करते पकड़ा गया, वह रामनारायन सरदार के समूह का था"।

'माटी–माटी आर काटि उपन्यास' में सामाजिक विघटन– 'माटी–माटी आरकाटि' उपन्यास में सामाजिक विघटन की स्थिति भयावह तरीके से दिखाया गया है। आदिवासी मजदूरों को माल और बोझ ढोने के लिए व्यवहार किया जाता है। जहाज के तमाम बड़े–बड़े पद पर तथाकथित उच्च कुल के लोग ही थे। जहाज में भी चौकिदार और सिपाही वही सब थे। उपन्यास में एतो, सुखराम, जगत, जीतन, बुधु, सागू, भादू, और रंगता के बातों से यह स्पष्ट हो जाता है। उपन्यासकार लिखते हैं "रजपूत अउर बराहमन लोग लेकिन बहुते खराप होता है, चउकीदार– सिपाही सब ओही लोग है। इनका काम है बस झूठा–मूठा केस में फंसाकर उरांव–मुंडा अउर खड़िया लोगों को लूटना। अउर कोट–कचेरी में मुसलमान लोग का राज है। सब राजपूत अउर मुसलमान लोग अंगरेज कंपनी से मेसामेसी (मिला

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

हुआ) है।'' उनके इन्हीं बातों में यह स्पष्ट हो जाता है, की आदिवासियों को सभी लोग लूटने, अत्याचार करने में लगें हैं। ब्रिटिश सरकार का अत्याचार इस कदर था कि जहाज में हमेशा भय का वातावरण बना रहता था। जहाज में मालागासी नाविक सुल्तान मजदूरों को सचेत करते हुए कहता है ''मैं साला सुल्तान, सिरिफ नाम का सुल्तान है, न तो बाप का जइसा बनने सका अउर न उस मालगासी रानी जइसा। का करें, अल्लाह का मर्जी! उहे तो सबका सुल्तान है। तभी तो हमको ई साला कुत्ता अंगरेज लोग का मातहत काम करना पड़ रहा है। तुम लोग होशियारी से रहना। ई लोग मरा हुआ अदमी का चमड़ी भी बेच के पइसा कमाने से बाज नइ आता है।'' इस कथन से स्पष्ट हो जाता है की अंग्रेज लोग किस हद तक जा सकते हैं। अंग्रेजों का अत्याचार असहनीय था।

'माटी–माटी आर काटि उपन्यास' गरीबी की त्रासदी– 'माटी–माटी अरकाटी' उपन्यास में उपन्यासकार गरीब मजदूरों की स्थिति को अत्यंत मार्मिक और हृदयस्पर्शी ढंग से प्रस्तुत किए हैं। तत्कालीन अंग्रेज सरकार के द्वारा समाज में आर्थिक असमानता किस कदर बिगड़ा हुआ था वह इस ग्रन्थ में स्पष्ट वर्णन है। दो मुठ्ठी भात खाने के लिए, अपने परिवार को ऋण से, कर्ज से मुक्त कराने खातिर अपने देश तक को छोड़ने के लिए मजबूर हो जाते हैं। उपन्यासकार सर्दी के समय उनकी त्रासदी को दिखाते हुए कहते हैं कि उन हिल कुलियों ने एक कंबल की खातिर देश छोड़ कर मॉरिशस जाने के लिए राजी हो जाते हैं। उपन्यास में मॉरिशस के इमाइग्रेंट अफसर मिस्टर एंडरसन हिल कुलियों की गौरव गाथा कहने के साथ–साथ उनकी मजबूरी को बताते हुए कहते हैं'' 'टर्नअप' यानी गरीब लोगों को बहला–फुसलाकर मॉरिशस जैसी दूसरी कॉलोनियों में ले जाना। सर्दी का मौसम इस लिहाज से बहुत लाभकारी होता था तेजी से गांव–गांव फैल रहे कंपनी के एजेंटों और अरकाटियों के लिए। हड्डियों को कंपकंपा देने वाली ठंड के दिनों में वे महज एक 'कंबल' के सामने घुटने टेक देते थे।'' कैप्टन स्कॉल्टन को हिल कुलियों के बारे में बहुत जानकारी नहीं थी। इसलिए उसने एंडरसन से पूछा, 'आई डोंट नो सर, रिगार्डिंग देअर पूअर प्रेजेंस, बट कैन आई नो व्हाट डिफरेंस बिटविन फ्रॉम हिल्स एंड अदर कुलीज?' एंडरसन मुस्कुराया, 'दुनिया में उनसे ईमानदार और हार्ड लेबरर कोई नहीं होता मिस्टर स्कॉल्टन ! मॉरिशस जैसे प्लांटेशन कॉलोनियों में उनकी बहुत मांग है। कलकत्ता से दक्षिण–पश्चिम में छोटानागपुर कोई जगह है। जंगलों और पहाड़ों से घिरी हुई। ये लोग उधर के ही रहने वाले हैं। धांगर, संताल और मुंडा समुदाय के। इनमें जाति नहीं होती। बहुत ही साधारण होते हैं ये लोग। जितने मजबूत, उतने ही मेहनती।''

आदिवासियों की तंगी हालत को बताने के साथ–साथ उनके मेहनत को उपन्यासकार यथार्थ भाव से वर्णन किए हैं। गरीब आदमी की स्थिति वास्तव में बहुत खराब ही रहती है। कोंता के पिताजी और वे दोनों साहूकार का पैसा चुकाने के लिए पूरा परिवार दिन रात काम करता है। फिर भी एक महीने में सूद ही दे पाते हैं। फिर मजबूरन कोंता को मजदूरी के लिए जाना होता है। इस प्रकार मजदूरी और नौकरी के लिए उन्हें एक जगह से दूसरे जगह लिया जाता है और अंत में ब्रिटिश एजेंट के हाथों बेच दिया जाता है और कोंता इस प्रकार पेट के भूख के लिऐ मॉरिशस मजदूरी करने पहुंच जाता है।

'माटी–माटी आर काटि उपन्यास' इंसानी बाजार– बाजार तो हमने बहुत देखे हैं सुने भी हैं परंतु इस 'माटी–माटी अरकाटी' उपन्यास में जो बाजार का वर्णन किया गया है वाकई दिल को दहला देने वाली है। मॉरिशस पहुंचने के बाद सभी मजदूरों को एक खुले मैदान में लाया जाता है, उन्हें देख कर शुगर मील के मालिकों के दिल खुशी में खिल उठते हैं। उन्हें देख कर आधुनिक बाजार में जैसे ऑफर की झड़ी लग जाती है, ठीक वैसे ही सरदार लोग ऑफर दे रहे थे 'इधर आओ ! खाना मिलेगा, कपड़ा–लत्ता मिलेगा, महीना पांच रुपिया नगद। सप्ताह में एक दिन छुट्टी। ''हमारे साथ चलो। हमारे मालिक खाना भी देंगे और पगार के अलावा समय–समय पर इनाम भी।''झूठे लालच में नहीं फंसना। हमारे फलाना साहब बहुत दयालु हैं, इधर आओ,'सांच को आंच नहीं, मालिक हो तो फलाना जैसा, खाना–पीना सब फ्री, रहने को मकान भी, आ जाओ, सब इधर आओ।'' जितने सरदार उतनी तरह की बातें।''

सिर्फ यही नहीं सरदार उनके मुंह खोल का दांत भी गिन रहे थे, आगे पीछे ठोक के देख रहे थे मानो वे कोई इंसान नहीं जानवर हैं। जैसे बाजार में गाय, बैल की दांत गिनकर उनके उम्र की पता किया जाता है। ''रामनारायन और बेचन मुंह बाए भीड़ में खड़े थे। उन दोनों का भी वही हाल था, जो दूसरे कुलियों का था। सब हैरत में थे। मानो वे सब जानवर हों और उनके दांत–जबड़े, छाती, चूतड़ वगैरह से उनकी कीमत लगाई जा रही है ठीक सोनपुर के जानवर मेले की तरह।'' इस तरह से दोपहर ढलते सभी कुली इंसानी बाजार में बिक गए जैसे हर बाजार में होता है।

'माटी–माटी आर काटि उपन्यास' में दिखाई न देने वाली भ्रष्टाचार की समस्या– 'माटी–माटी अरकाटी' उपन्यास में उपन्यासकार प्रशासन में हो रही भ्रष्टाचार को आदि से अंत तक जीवंत तरीके से प्रस्तुत किए हैं। उपन्यास में आरंभ से ही उपन्यासकार अश्विनी कुमार पंकज लिखते हैं की मालवाही जहाज में अत्यंत अमानवीय तरीके से लगभग 80 कुलियों को बिना किसी मूलभूत सुविधा के मॉरिशस लिया जा रहा था। औरतों और पुरुषों को जबरन मॉरिशस तक पहुंचाते–पहुंचाते 76 लोग बचते हैं। मॉरिशस पहुंचने के बाद ही उन्हें जानवर की तरह बेच दिया जाता है। उसके बाद कानूनी रूप से इसे मंजूरी देने के लिए उन्हें मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया जाता है। मजिस्ट्रेट उन कुलियों और एग्रीमेंट को बिना देखे ही पूछते हैं ''आर यू एग्री विद द कॉन्ट्रैक्ट ?'' कलकत्ता के अंग्रेज साहबों जैसी ही थी उसकी भाषा। समझ से बाहर। सब गिरगिट जैसा सिर हिला–डुलाकर एक–दूसरे को देखने लगे। लछुमन सरदार ने उन्हें समझाया, मजिस्ट्रेट साहब क्या पूछ रहे हैं। सबने 'हां' में सिर हिला दिया। नियमतः एग्रीमेंट पर मजिस्ट्रेट के सामने मालिकों और मजदूरों को और फिर इमाइग्रेट अफसर को हस्ताक्षर करना था, लेकिन मजिस्ट्रेट के टेबल पर पड़े एग्रीमेंट पर पहले से ही उन दोनों के हस्ताक्षर मौजूद थे। केवल कुलियों के हस्ताक्षर नहीं थे। ये भ्रष्टाचार के लिखा–जोखा प्रमाण था जिसमें मजिस्ट्रेट तक प्रत्यक्ष रूप से शामिल थे। सरदारों के साथ मिलकर अफसर और कर्मचारी एग्रीमेंट पर कुलियों का अंगूठा लेने में लगे थे। इस प्रकार सभी

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

मिल जुलकर अंग्रेजी शासन के लालच में आकर भ्रष्टाचार में लिप्त थे।

'माटी–माटी आर काटि उपन्यास' में वर्णित स्त्री उत्पीड़न– 'माटी–माटी अरकाटी' उपन्यास में उपन्यासकार मजदूरों की विवशता को दिखाते हुए दिन प्रतिदिन जूझते हर परिस्थिति को बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। नारी के ऊपर हो रही अत्याचार, शोषण को उन्होंने यथार्थ भाव से दिखाते हैं। स्त्रियों की शोषण जहाज में चढ़ने के साथ ही शुरू हो जाती है। उन्हें बिना सहमति के किसी भी मर्द के साथ पत्नी के तौर पर जोड़ दिया जाता है।

घर में भैंसा सूर, ससुर तक शारीरिक शोषण करते थकते नहीं। उनके चंगुल से जब 'जोगता' भागना चाही तो उन्हें पाखंडी बाबा के चंगुल में फंस जाता है और अंत में उसे बेच देते हैं। उपन्यास में शुरुआत से अंत तक नारी जाति के ऊपर हो रहा अमानवीय अत्याचार का वर्णन किया गया है। नारी अपने घर पर भी सुरक्षित नहीं रहती है। जोगता बोलती है "भेन्ससुर देह नासिए के छोड़लक। ओकरा बाद तऽ मोका देखिते उनकर मन जब होखे तब...'कहते–कहते जोगती का कंठ डबडबा गया।' अइसहीं एक दिन ससुरो धर लिहलन। का कहतीं! केकरा से कहतीं! केह पतियइतन ना नू! तइयो एक बेर सास भिरू कहलीं। सास हमरे के गरियावे लगलन "अगर नारी अपने घर में ही सुरक्षित नहीं है तो किस पर विश्वास किया जाए।

जहाज में एक दिन कंगना के साथ बदतमीजी किया जाता है और उसके खिलाफ सभी लोग एकत्रित हो कर जहाज के कृ मेम्बर पर आक्रमण कर दिए और इस विरोध के लिए भले ही उन्हें 3 दिन की सजा मिले परंतु आगे किसी औरत के साथ छेड़ खानी नहीं हुई। ये विडंबना ही है कि ठीक 3 महीने के बाद कंगना को उसकी झोपड़ी से उठाकर ले जाते हैं और उसकी इज्जत के साथ खिलवाड़ करते हैं, बलात्कार कर फेंक दिया जाता है अंग्रेज अधिकारी पाशविक अत्याचार करने के बाद कंगना को उसके घर के सामने फेंक देते हैं ।

कुंती को जब रामनारायण अपना हवस का शिकार बनाना चाहा तो कुंती किसी शेरनी की भांति गुर्राती हुए कहती है "हम फुलवरिया चमईन नउ, बामहन के बेटी ही। गर्दानिया रेत ते एको देर ना लगतव।" साहित्य में समाज की छवि प्रतिफलित होती है। इस उपन्यास में भी नारी उत्पीड़न की समस्या का सही चित्रण किया गया है। कुंती को बचपन से ही तत्कालीन बाल विवाह की रीति के तहत शादी कर दिया गया था। परंतु शादी के दिन ही उसके पति की, सांप काटने से मौत हो गई और यही वजह है कि कुंती को मांगलिक कह दिया गया। तरह–तरह की उलाहना को सुन–सुन कर कुंती भी खुद को मौत के गले लगाना ही सबसे अच्छा समझी और घर–द्वार, माता–पिता को छोड़ कर सोन नदी में कूदकर जान दे दी परंतु कुंती मरी नहीं उसे भी इंसानी बाजार में बेच दिया गया और वह इस प्रकार मजदूर बन गई।

अंग्रेज लोगों का अत्याचार हर दिन बढ़ते जा रहा था। उनके सामने मजदूर सिर्फ एक कीड़े मकोडे की तरह ही थे। पिछले 3 सालों में जितने स्त्री वहीं पर कार्यरत थे उनके गर्भवती होने के दौरान उन्हें छूटी तक नहीं मिलती थी। वे काम करते–करते बच्चे जन्म करने के लिए मजबूर थे। कुंती भी आठ माह की गर्भावास में भी काम करने जाती थी। उपन्यास में भले ही नारी पर अत्याचार, शोषण या प्रताड़ना की अमानवीय पक्ष को दिखाया हो परंतु उसमें भी सच्ची मानवीयता को दिखाया गया है। सामाजिकता तथा सहजीविता को भी दिखाया गया है। कुंती के बच्चे होने पर जब पूछा जाता है की कौन आया है? 'लिपे ओली आइल बिआ कि जुआठ धरे ओला!' भीड़ में से कंगना के मर्द गजाधर की आवाज सुनाई पड़ी। रामदुलारी ने जवाब की बजाय सवाल कर दिया था, 'तोहनिए बतावऽ...के आइलबा? परिवार के बढ़ावे ओला बा...जे भी आइल बा।" 'परिवार त दूनों से बाढ़ेला...अरे! बच्चा बा कि बुझौव्वल?

आदिवासी समुदाय में बेटा या बेटी में कोई फर्क नहीं करते बल्कि दोनों को समान दर्जे से दिखा जाता है। आदिवासी समुदाय का यही मानना है की बेटा हो या बेटी वंश तो दोने से बढती है। इस प्रकार आदिवासी दर्शन, आदिवासी विशिष्टता हर कहीं दिखने को मिलती है।

उपन्यास में नारी के ऊपर हो रहे प्रत्यक्ष शोषण को दिखाया गया है। कुंती,कंगना, फुलवरिया, इमरती, सभी को शारीरिक प्रताड़ना देने के लिए कोशिश किया गया। इमरती को विरोध करने पर मौत की घाट उतार देते हैं। उपन्यासकार अश्विनी कुमार पंकज इस उपन्यास में औरतों के ऊपर हो रहे अत्याचार को जिस तरीके से जीवंत वर्णन किए हैं उतनी ही सजीवता के साथ नारी की महत्व को भी वर्णन किए हैं। बस्ती से जब जमुनी की 12 साल की बच्ची को अंग्रेज बंदूक के बल पर उठा के ले जाते हैं तो तमाम बस्ती के लोग इकट्ठा हो कर लड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं। उसी वक्त तमाम औरतें अपने साहस का परिचय देते हुए आगे आते हैं और बोलते हैं" हमनिया चलबई। हियां बईठ कर रोवे – धोवे से कुछ ना होतई। जहां मरद ओहिजे साथ –साथ औरत।" इसी तरह सभी आदिवासी औरतों ने मर्दों के साथ दिए और साथ मिलकर लड़ाई लड़ते हैं और कोठी से जमुनी की बेटी को छुड़ा के ले आते हैं।

'माटी–माटी आर काटि उपन्यास' में मजदूरों के पर जुल्म–'माटी–माटी अरकाटी' उपन्यास में मजदूरों के ऊपर जुल्म की जो गाथा है व इतिहास है। आदि से अंत तक सिर्फ जुल्म ही जुल्म है। मॉरिशस में लोग मजबूरी के कारण दो वक्त की रोटी के लिए काम करते थे। अगर काम करते–करते बात भी करते थे तो हंटर से मार मिलता था। अगर तबीयत खराब हुआ या फिर अन्य किसी कारण से काम पर नहीं जाने पर उन्हें कड़ी से कड़ी सजा दी जाती थी। प्रति सप्ताह में एक दिन सजा का दिन होता था। एक दिन की छुट्टी के लिए दो दिनों की मजूरी काटी जाती थी। दस–दस हंटर की सजा भी मिलती थी। सिर्फ यह नहीं कुछ लोगों को दो दिन बिना छाया के पेड़ से लटकाकर बीस–बीस कोड़े लगाए जाते थे। ब्रिटिश शासक का जुल्म इतना तक सीमित नहीं था। उन मजदूरों में से कुछ मजदूर काम से डरकर या फिर उनके अत्याचार से पीड़ित हो कर भाग कर जंगल में छुप जाते थे। उन्हें मारने के लिए माह में एक दिन शिकार किया जाता है जिसे "भगेडू शिकार" कहा जाता है। मजदूरों को इस प्रकार प्रताड़ित किया जाता रहा मानो वे इन्सान

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

नहीं जानवर हैं। उनके पास सिर्फ दिन भर काम करते रहने के बावजूद सिर्फ दो वक्त की रोटी भी बहुत मुश्किल से मिलती थी। सजने संवरने का बात तो दूर आईना तक घर में नहीं थी। उपन्यास में एक वाकया से यह सामने आता है उसकी वर्णन करते उपन्यासकार लिखते हैं "एक जगह खूब सारे गुलइची के फूल थे। उजले और पीले रंगों के। कोंता ने पीले रंग के गुलइची के फूलों का एक गुच्छा तोड़ा और कुंती के जूड़े में लगा दिया। फूल लगते ही कुंती की आभा और खिल उठी। कुंती ने कभी फूलों को इस तरह से बालों में नहीं लगाया था। उसके गांव में लड़कियां साज–सिंगार सोने–चांदी के गहनों से करती थीं। फूल तो सिर्फ पूजा में देवताओं को चढ़ता था। उसका जी फूल लगा चेहरा देखने को मचल उठा। एजी३! हमर मन अपन चेहरा देखे ला करइत हई। कोनों तलाब भेंटाई होले देइख लेबे। हंसकर बढ़ता रहा था कोंता।"

उनकी आर्थिक स्थिति को देख यहीं से अंदाज लगा जा सकता है की घर में एक आईना भी नहीं था। मजदूरों के ऊपर जुल्म करना ही सुगर मिल के कर्मचारी अपना कर्तव्य समझ रहे थे। जब कुंती का बच्चा होने वाला रहता है उस वक्त फुलवरिया और इमरती कुंती को मदद करना जरूरी समझते हैं और घर जाने के लिये ओवरसियर के पांव पकड़ लेते हैं। परंतु ओवरसियर उन्हें लात मार के भागा देना चाहता है परंतु एक औरत की दिल दूसरे औरत के प्रति इतने समर्पित रहती है की मार खाने के बावजूद भी पांव छोड़ती नहीं।

कुंती के घर जब बच्चा होता है तो अंग्रेज साहब (मजेज साहब) के घर से नया कपड़ा और शक्कर आता है परंतु यह इसलिए नहीं की नया बच्चा आया है परंतु इसलिए ये उपहार भेजा जाता है तॉकि मोजेज साहब को मुफ्त में एक मजदूर मिलने जा रहा है। मजदूरों के ऊपर जुल्म इस कदर था की उन्हें काम के वक्त दूसरे जगह हिलना भी नहीं था। बच्चों को दूध पिलाने के लिए भी नहीं "पिछले रविवार को कुंती ने पीठ पर दस हंटर झेले थे। यह सजा उसे ओवरसियर की बात नहीं मानने पर मिली थी। हुआ यह था कि खेत के किनारे पड़ी 'सिनगी' काफी देर से भूख से रो रही थी। खेत में काम करते वक्त किसी औरत को बच्चे को दूध पिलाने की छुट्टी नहीं मिलती थी। उसे कैसे मिलती? दोपहर के खाने के अवकाश में अभी बहुत देर थी। कुंती से नहीं रहा गया। गर्मी का महीना था। बच्चे की रुलाई उसका करेजा चीर रही थी। छातियों से दूध चुने लगा था। उसने सजा की परवाह किए बिना जाकर बेटी को अपनी छाती से लगा लिया। सिपाही हंटर फटकार–फटकारकर उसे मना करता रहा। उसने मुड़कर भी नहीं देखा।" मां की ममता आगे दुःख कष्ट सभी तुच्छ हो जाती है।

मजदूर अंग्रेजों के लिए सिर्फ एक साधन ही थे अंग्रेजों के सामने उनका औकात एक जानवर जैसे ही था। उन्हें सामने देखना ही पसंद नहीं करते। "केसिरा की तरफ मुड़कर सेरामी बोला इन जंगली लोग को ले जाओ मेरे सामने से खड़ा रहेगा तो मेरे को इन्फेक्शन हो जायेगा। गंदा लोग।" कोंता के काम करते–करते जब कीचड़ छिटक कर एक अंग्रेज कर्मचारी के ऊपर गिरता है तो उसे जीभ से चाट कर साफ करने के लिए कहा जाता है। इस प्रकार मानवीयता का सीमा लांघते यह उपन्यास गरीब मजदूरों की गाथा को सुनाता है। यह उपन्यास समाज में हो रही एक–एक व्यवस्था पर परदा उठाता है आदिवासियों के ऊपर हो रहे शोषण, अत्याचार, आदि को यथार्थ भाव से वर्णन किए हैं। यह उपन्यास 260 पृष्ठ में है और इसके सन्दर्भ सूची पर दृष्टि डालने पर लगभग 150 ऐसे सन्दर्भ मिलेंगे जो ऐतिहासिक और औपनिवेशिक काल के विभिन्न तथ्य और विभाग से जुड़ा हुआ है। इस सभी तथ्य को देखने पर यह उपन्यास कम सच्चाई के साथ लिखा गया गिरमिटियों का कहानी लगता है। इस तरह हम देखते हैं की अश्वनी कुमार पंकज द्वारा रचित 'माटी–माटी अरकाटी' उपन्यास एक कालजयी उपन्यास है जो तत्कालीन कथा वस्तु और सामाजिक स्थिति को पाठकों के अंतर्मन तक पहुंचाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. देवी, महाश्वेता,जंगल के दावेदार, राधाकृष्ण पेपर बैक, नई दिल्ली, दूसरी संस्करण, 2001.
2. पंकज, अश्वनी कुमार, माटी माटी अरकाटी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2016.

*****